****

Surdas

**Born** 1478

**Died** 1573

**Poetry:**

**राग गौड़ मलार**

आदि सनातन, हरि अबिनासी । सदा निरंतर घठ घट बासी ॥  
पूरन ब्रह्म, पुरान बखानैं । चतुरानन, सिव अंत न जानैं ॥  
गुन-गन अगम, निगम नहिं पावै । ताहि जसोदा गोद खिलावै ॥  
एक निरंतर ध्यावै ज्ञानी । पुरुष पुरातन सो निर्बानी ॥  
जप-तप-संजम ध्यान न आवै । सोई नंद कैं आँगन धावै ॥  
लोचन-स्रवन न रसना-नासा । बिनु पद-पानि करै परगासा ॥  
बिस्वंभर निज नाम कहावै । घर-घर गोरस सोइ चुरावै ॥  
सुक-सारद- से करत बिचारा । नारद-से पावहिं नहिं पारा ॥  
अबरन-बरन सुरनि नहिं धारै । गोपिन के सो बदन निहारै ॥  
जरा-मरन तैं रहित, अमाया । मातु-पिता, सुत, बंधु न जाया ॥  
ज्ञान-रूप हिरदै मैं बोलै । सो बछरनि के पाछैं डोलै ॥  
जल, धर, अनिल, अनल, नभ, छाया । पंचतत्त्व तैं जग उपजाया ॥  
माया प्रगटि सकल जग मोहै । कारन-करन करै सो सोहै ॥  
सिव-समाधि जिहि अंत न पावै । सोइ गोप की गाइ चरावै ॥  
अच्युत रहै सदा जल-साई । परमानंद परम सुखदाई ॥  
लोक रचे राखैं अरु मारे । सो ग्वालनि सँग लीला धारै ॥  
काल डरै जाकैं डर भारी । सो ऊखल बाँध्यौ महतारी ॥  
गुन अतीत, अबिगत, न जनावै । जस अपार, स्रुति पार न पावै ॥  
जाकी महिमा कहत न आवै । सो गोपिन सँग रास रचावै ॥  
जाकी माया लखै न कोई । निर्गुन-सगुन धरै बपु सोई ॥  
चौदह भुवन पलक मैं टारै । सो बन-बीथिन कुटी सँवारै ॥  
चरन-कमल नित रमा पलौवै । चाहति नैंकु नैन भरि जोवै ॥  
अगम, अगोचर, लीला-धारी । सो राधा-बस कुंज-बिहारी ॥  
बड़भागी वै सब ब्रजबासी । जिन कै सँग खेलैं अबिनासी ॥  
जो रस ब्रह्मादिक नहिं पावैं । सो रस गोकुल-गलिनि बहावैं ॥  
सूर सुजस ब्रह्मादिक नहिं पावैं । सो रस गोकुल-गलिनि बहावैं ॥  
सूर सुजस कहि कहा बखानै । गोबिंद की गति गोबिंद जानै ॥

प्रात भयौ, जागौ गोपाल ।  
नवल सुंदरी आईं, बोलत तुमहि सबै ब्रजबाल ॥  
प्रगट्यौ भानु, मंद भयौ उड़पति, फूले तरुन तमाल ।  
दरसन कौं ठाढ़ी ब्रजवनिता, गूँथि कुसुम बनमाल ॥  
मुखहि धौइ सुंदर बलिहारी, करहु कलेऊ लाल ।  
सूरदास प्रभु आनँद के निधि, अंबुज-नैन बिसाल ॥

﻿**राग सारंग**

भावती लीला, अति पुनीत मुनि भाषी। सावधान ह्वै सुनौ परीच्छित, सकल देव मुनि साखी ॥  
कालिंदी कैं कूल बसत इक मधुपुरि नगर रसाला। कालनेमि खल उग्रसेन कुल उपज्यौ कंस भुवाला ॥  
आदिब्रह्म जननी सुर-देवी, नाम देवकी बाला। दई बिबाहि कंस बसुदेवहिं, दुख-भंजन सुख-माला ॥  
हय गय रतन हेम पाटंबर, आनँद मंगलचारा। समदत भई अनाहत बानी, कंस कान झनकारा ॥  
याकी कोखि औतरै जो सुत, करै प्रान परिहारा। रथ तैं उतरि, केस गहि राजा, कियौ खंग पटतारा ॥  
तब बसुदेव दीन ह्वै भाष्यौ, पुरुष न तिय-बध करई। मोकौं भई अनाहत बानी, तातैं सोच न टरई ॥  
आगैं बृच्छ फरै जो बिष-फल, बृच्छ बिना किन सरई। याहि मारि, तोहिं और बिबाहौं, अग्र सोच क्यों मरई ॥  
यह सुनि सकल देव-मुनि भाष्यौ, राय न ऐसी कीजै। तुम्हरे मान्य बसुदेव-देवकी, जीव-दान इहिं दीजै ॥  
कीन्यौ जग्य होत है निष्फल, कह्यौ हमारौ कीजै। याकैं गर्भ अवतरैं जे सुत, सावधान ह्वै लीजै ॥  
पहिलै पुत्र देवकी जायौ, लै बसुदेव दिखायौ। बालक देखि कंस हँसि दीन्यौ, सब अपराध छमायौ ॥  
कंस कहा लरिकाई कीनी, कहि नारद समुझायौ। जाकौ भरम करत हौ राजा, मति पहिलै सो आयौ ॥  
यह सुनि कंस पुत्र फिरि माग्यौ, इहिं बिधि सबन सँहारौं। तब देवकी भई अति ब्याकुल, कैसैं प्रान प्रहारौं ॥  
कंस बंस कौ नास करत है, कहँ लौं जीव उबारौं। यह बिपदा कब मेटहिं श्रीपति अरु हौं काहिं पुकारौं ॥  
धेनु-रूप धरि पुहुमि पुकारी, सिव-बिरंचि कैं द्वारा। सब मिलि गए जहाँ पुरुषोत्तम, जिहिं गति अगम अपारा ॥  
छीर-समुद्र-मध्य तैं यौं हरि, दीरघ बचन उचारा। उधरौं धरनि, असुर-कुल मारौं, धरि नर-तन-अवतारा ॥  
सुर, नर, नाग तथा पसु-पच्छी, सब कौं आयसु दीन्हौं। गोकुल जनम लेहु सँग मेरैं, जो चाहत सुख कीन्हौ ॥  
जेहिं माया बिरंचि-सिव मोहे, वहै बानि करि चीन्हो। देवकि गर्भ अकर्षि रोहिनी, आप बास करि लीन्हौ ॥  
हरि कैं गर्भ-बास जननी कौ बदन उजारौ लाग्यौ। मानहुँ सरद-चंद्रमा प्रगट्यौ, सोच-तिमिर तन भाग्यौ ॥  
तिहिं छन कंस आनि भयौ ठाढ़ौ, देखि महातम जाग्यौ। अब की बार आपु आयौ है अरी, अपुनपौ त्याग्यौ ॥  
दिन दस गएँ देवकी अपनौ बदन बिलोकन लागी। कंस-काल जिय जानि गर्भ मैं, अति आनंद सभागी ॥  
मुनि नर-देव बंदना आए, सोवत तैं उठि जागी। अबिनासी कौ आगम जान्यौ, सकल देव अनुरागी ॥  
कछु दिन गएँ गर्भ कौ आलस, उर-देवकी जनायौ। कासौं कहौं सखी कोऊ नाहिंन , चाहति गर्भ दुरायौ ॥  
बुध रोहिनी-अष्टमी-संगम, बसुदेव निकट बुलायौ। सकल लोकनायक, सुखदायक, अजन, जन्म धरि आयौ ॥  
माथैं मुकुट, सुभग पीतांबर, उर सोभित भृगु-रेखा। संख-चक्र-गदा-पद्म बिराजत, अति प्रताप सिसु-भेषा ॥  
जननी निरखि भई तन ब्याकुल, यह न चरित कहुँ देखा। बैठी सकुचि, निकट पति बोल्यौ, दुहुँनि पुत्र-मुख पेखा ॥  
सुनि देवकि ! इक आन जन्म की, तोकौं कथा सुनाऊँ। तैं माँग्यौ, हौं दियौ कृपा करि, तुम सौ बालक पाऊँ ॥  
सिव-सनकादि आदि ब्रह्मादिक ज्ञान ध्यान नहीं आऊँ। भक्तबछल बानौ है मेरौ, बिरुदहिं कहा लजाऊँ ॥  
यह कहि मया मोह अरुझाए, सिसु ह्वै रोवन लागे। अहो बसुदेव, जाहु लै गोकुल, तुम हौ परम सभागे ॥  
घन-दामिनि धरती लौं कौंधै, जमुना-जल सौं पागै। आगैं जाउँ जमुन-जल गहिरौ, पाछैं सिंह जु लागे ॥  
लै बसुदेव धँसे दह सूधे, सकल देव अनुरागे। जानु, जंघ,कटि,ग्रीव, नासिका, तब लियौ स्याम उछाँगे ॥  
चरन पसारि परसि कालिंदी, तरवा तीर तियागे। सेष सहस फन ऊपर छायौ, लै गोकुल कौं भागे ॥  
पहुँचे जाइ महर-मंदिर मैं, मनहिं न संका कीनी। देखी परी योगमाया, वसुदेव गोद करि लीनी ॥  
लै बसुदेव मधुपुरी पहुँचे, प्रगट सकल पुर कीनी। देवकी-गर्भ भई है कन्या, राइ न बात पतीनी ॥  
पटकत सिला गई, आकासहिं दोउ भुज चरन लगाई। गगन गई, बोली सुरदेवी, कंस, मृत्यु नियराई ॥  
जैसैं मीन जाल मैं क्रीड़त, गनै न आपु लखाई। तैसैंहि, कंस, काल उपज्यौ है, ब्रज मैं जादवराई ॥  
यह सुनि कंस देवकी आगैं रह्यौ चरन सिर नाई। मैं अपराध कियौ, सिसु मारे, लिख्यौ न मेट्यौ जाई ॥  
काकैं सत्रु जन्म लीन्यौ है, बूझै मतौ बुलाई। चारि पहर सुख-सेज परे निसि, नेकु नींद नहिं आई ॥  
जागी महरि, पुत्र-मुख देख्यौ, आनंद-तूर बजायौ। कंचन-कलस, होम, द्विज-पूजा, चंदन भवन लिपायौ ॥  
बरन-बरन रँग ग्वाल बने, मिलि गोपिनि मंगल गायौ। बहु बिधि ब्योम कुसुम सुर बरषत, फुलनि गोकुल छायौ ॥  
आनँद भरे करत कौतूहल, प्रेम-मगन नर-नारी। निर्भर अभय-निसान बजावत, देत महरि कौं गारी ॥  
नाचत महर मुदित मन कीन्हैं, ग्वाल बजावत तारी। सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे, मथुरा-गर्व-प्रहारी ॥

जागौ, जागौ हो गोपाल ।   
नाहिन इतौ सोइयत सुनि सुत, प्रात परम सुचि काल ॥  
फिरि-फिरि जात निरखि मुख छिन-छिन, सब गोपनि बाल ।  
बिन बिकसे कल कमल-कोष तैं मनु मधुपनि की माल ॥  
जो तुम मोहि न पत्याहु सूर-प्रभु, सुन्दर स्याम तमाल ।  
तौ तुमहीं देखौ आपुन तजि निद्रा नैन बिसाल ॥

गोकुल प्रगट भए हरि आइ।  
अमर-उधारन असुर-संहारन, अंतरजामी त्रिभुवन राइ॥  
  
माथैं धरि बसुदेव जु ल्याए, नंद-महर-घर गए पहुँचाइ।  
जागी महरि, पुत्र-मुख देख्यौ, पुलकि अंग उर मैं न समाइ॥  
  
गदगद कंठ, बोलि नहिं आवै, हरषवंत ह्वै नंद बुलाइ।  
आवहु कंत,देव परसन भए, पुत्र भयौ, मुख देखौ धाइ॥  
  
दौरि नंद गए, सुत-मुख देख्यौ, सो सुख मापै बरनि न जाइ।  
सूरदास पहिलैं ही माँग्यौ, दूध पियावन जसुमति माइ॥

**राग गांधार**

उठीं सखी सब मंगल गाइ ।

जागु जसोदा, तेरैं बालक उपज्यो, कुँअर कन्हाइ ॥

जो तू रच्या-सच्यो या दिन कौं, सो सब देहि मँगाइ ।

देहि दान बंदीजन गुनि-गन, ब्रज-बासनि पहिराइ ॥

तब हँसि कहत जसोदा ऐसैं, महरहिं लेहु बुलाइ ।

प्रगट भयौ पूरब तप कौ फल, सुत-मुख देखौ आइ ॥

आए नंद हँसत तिहिं औसर, आनँद उर न समाइ ।

सूरदास ब्रज बासी हरषे, गनत न राजा-राइ ॥

राग रामकली

हौं इक नई बात सुनि आई ।  
महरि जसौदा ढौटा जायौ, घर घर होति बधाई ॥

द्वारैं भीर गोप-गोपिनि की, महिमा बरनि न जाई ।  
अति आनन्द होत गोकुल मैं, रतन भूमि सब छाई ॥

नाचत बृद्ध, तरुन अरु बालक, गोरस-कीच मचाई ।  
सूरदास स्वामी सुख-सागर, सुंदर स्याम कन्हाई ॥

हौं सखि, नई चाह इक पाई ।  
ऐसे दिननि नंद कैं सुनियत, उपज्यौ पूत कन्हाई ॥

बाजत पनव-निसान पंचबिध, रुंज-मुरज सहनाई ।  
महर-महरि ब्रज-हाट लुटावत, आनँद उर न समाई ॥

चलौं सखी, हमहूँ मिलि जैऐ, नैंकु करौ अतुराई ।  
कोउ भूषन पहिर्‌यौ, कोउ पहिरति, कोउ वैसहिं उठि धाई ॥

कंचन-थार दूब-दधि-रोचन, गावति चारु बधाई ।  
भाँति-भाति बनि चलीं जुवति जन, उपमा बरनि न जाई ॥

अमर बिमान चढ़े सुख देखत, जै-धुनि-सब्द सुनाई ।  
सूरदास प्रभु भक्त-हेत-हित, दुष्टनि के दुखदाई ॥

**राग धनाश्री**

आजु बधायौ नंदराइ कैं, गावहु मंगलचार ।  
आईं मंगल-कलस साजि कै, दधि फल नूतन-डार ॥  
उर मेले नंदराइ कैं, गोप-सखनि मिलि हार ।  
मागध-बंदी-सूत अति करत कुतूहल बार ॥  
आए पूरन आस कै, सब मिलि देत असीस ।  
नंदराइ कौ लाड़िलौ, जीवै कोटि बरीस ॥  
तब ब्रज-लोगनि नंद जू, दीने बसन बनाइ ।  
ऐसी सोभा देख कै, सूरदास बलि जाइ ॥

﻿**राग गौरी**

धनि-धनि नंद-जसोमति, धनि जग पावन रे ।धनि हरि लियौ अवतार, सु धनि दिन आवन रे ॥  
दसएँ मास भयौ पूत, पुनीत सुहावन रे ।संख-चक्र-गदा-पद्म, चतुरभुज भावन रे ॥  
बनि ब्रज-सुंदरि चलीं, सु गाइ बधावन रे ।कनक-थार रोचन-दधि, तिलक बनावन रे ॥  
नंद-घरहिं चलि गई, महरि जहँ पावन रे ।पाइनि परि सब बधू, महरि बैठावन रे ॥  
जसुमति धनि यह कोखि, जहाँ रहे बावन रे ।भलैं सु दिन भयौ पूत, अमर अजरावन रे ॥  
जुग-जुग जीवहु कान्ह, सबनि मन भावन रे ।गोकुल -हाट-बजार करत जु लुटावन रे ॥  
घर-घर बजै निसान, सु नगर सुहावन रे ।अमर-नगर उतसाह, अप्सरा-गावन रे ॥  
ब्रह्म लियौ अवतार, दुष्ट के दावन रे ।दान सबै जन देत, बरषि जनु सावन रे ॥  
मागध, सूत,भाँट, धन लेत जुरावन रे ।चोवा-चंदन-अबिर, गलिनि छिरकावन रे ॥  
ब्रह्मादिक, सनकादिक, गगन भरावन रे ।कस्यप रिषि सुर-तात, सु लगन गनावत रे ॥  
तीनि भुवन आनंद, कंस-डरपावन रे ।सूरदास प्रभु जनमें, भक्त-हुलसावन रे ॥

**राग कल्यान**

सोभा-सिंधु न अंत रही री ।  
नंद-भवन भरि पूरि उमँगि चलि, ब्रज की बीथिनि फिरति बही री ॥  
देखी जाइ आजु गोकुल मैं, घर-घर बेंचति फिरति दही री ।  
कहँ लगि कहौं बनाइ बहुत बिधि,कहत न मुख सहसहुँ निबही री ॥  
जसुमति-उदर-अगाध-उदधि तैं, उपजी ऐसी सबनि कही री ।  
सूरस्याम प्रभु इंद्र-नीलमनि, ब्रज-बनिता उर लाइ गही री ॥

**राग काफी**

आजु हो निसान बाजै, नंद जू महर के ।आनँद-मगन नर गोकुल सहर के ॥  
आनंद भरी जसोदा उमँगि अंग न माति, अनंदित भई गोपी गावति चहर के ।  
दूब-दधि-रोचन कनक-थार लै-लै चली, मानौ इंद्र-बधु जुरीं पाँतिनि बहर के ॥  
आनंदित ग्वाल-बाल, करत बिनोद ख्याल, भुज भरि-भरि अंकम महर के ।  
आनंद-मगन धेनु स्रवैं थनु पय-फेनु, उमँग्यौ जमुन -जल उछलि लहर के ॥  
अंकुरित तरु-पात, उकठि रहे जे गात, बन-बेली प्रफुलित कलिनि कहर के ।  
आनंदित बिप्र, सूत, मागध, जाचक-गन, अमदगि असीस देत सब हित हरि के ॥  
आनँद-मगन सब अमर गगन छाए पुहुप बिमान चढ़े पहर पहर के ।  
सूरदास प्रभु आइ गोकुल प्रगट भए, संतनि हरष, दुष्ट-जन-मन धरके ॥

(माई) आजु हो बधायौ बाजै नंद गोप-राइ कै ।जदुकुल-जादौराइ जनमे हैं आइ कै ॥  
आनंदित गोपी-ग्वाल नाचैं कर दै-दै ताल, अति अहलाद भयौ जसुमति माइ कै ।  
सिर पर दूब धरि , बैठे नंद सभा-मधि , द्विजनि कौं गाइ दीनी बहुत मँगाइ कै ॥  
कनक कौ माट लाइ, हरद-दही मिलाइ, छिरकैं परसपर छल-बल धाइ कै ।  
आठैं कृष्न पच्छ भादौं, महर कैं दधि कादौं, मोतिनि बँधायौ बार महल मैं जाइ कै ॥  
ढाढ़ी और ढ़ाढ़िनि गावैं, ठाढ़ै हुरके बजावैं, हरषि असीस देत मस्तक नवाइ कै ।  
जोइ-जोइ माँग्यौ जिनि, सोइ-सोइ पायो तिनि, दीजै सूरदास दर्स भक्तनि बुलाइ कै ॥

**राग जैतश्री**

आजु बधाई नंद कैं माई । ब्रज की नारि सकल जुरि आई ॥  
सुंदर नंद महर कैं मंदिर । प्रगट्यौ पूत सकल सुख- कंदर ॥   
जसुमति-ढोटा ब्रज की सोभा । देखि सखी, कछु औरैं गोभा ॥  
लछिमी- सी जहँ मालिनि बोलै । बंदन-माला बाँधत डोलै ॥  
द्वार बुहाराति फिरति अष्ट सिधि । कौरनि सथिया चीततिं नवनिधि ॥  
गृह-गृह तैं गोपी गवनीं जब । रंग-गलिनि बिच भीर भई तब ॥  
सुबरन-थार रहे हाथनि लसि । कमलनि चढ़ि आए मानौ ससि ॥  
उमँगी -प्रेम-नदी-छबि पावै । नंद-सदन-सागर कौं धावैं ॥  
कंचन-कलस जगमगैं नग के । भागे सकल अमंगल जग के ॥  
डोलत ग्वाल मनौ रन जीते । भए सबनि के मन के चीते ॥  
अति आनंद नंद रस भीने । परबत सात रतन के दीने ॥  
कामधेनु तैं नैंकु न हीनी । द्वै लख धेनु द्विजनि कौं दीनी ॥  
नंद-पौरि जे जाँचन आए । बहुरौ फिरि जाचक न कहाए ॥  
घर के ठाकुर कैं सुत जायौ । सूरदास तब सब सुख पायौ ॥

**राग बिलावल**

आजु गृह नंद महर कैं बधाइ ।  
प्रात समय मोहन मुख निरखत, कोटि चंद-छबि पाइ ॥  
मिलि ब्रज-नागरि मंगल गावतिं, नंद-भवन मैं आइ ।  
देतिं असीस, जियौ जसुदा-सुत कोटिनि बरष कन्हाइ ॥  
अति आनंद बढ्यौ गोकुल मैं, उपमा कही न जाइ ।  
सूरदास धनि नँद की घरनी, देखत नैन सिराइ ॥

माई) आजु तौ बधाइ बाजै मंदिर महर के ।   
फूले फिरैं गोपी-ग्वाल ठहर ठहर के ॥  
फूली फिरैं धेनु धाम, फूली गोपी अँग अँग ।   
फूले फरे तरबर आनँद लहर के ॥  
फूले बंदीजन द्वारे, फूले फूले बंदवारे ।   
फूले जहाँ जोइ सोइ गोकुल सहर के ॥  
फूलैं फिरैं जादौकुल आनँद समूल मूल ।   
अंकुरित पुन्य फूले पाछिले पहर के ॥  
उमँगे जमुन-जल, प्रफुलित कुंज-पुंज ।   
गरजत कारे भारे जूथ जलधर के ॥  
नृत्यत मदन फूले, फूली, रति अँग अँग ।   
मन के मनोज फूले हलधर वर के ॥  
फूले द्विज-संत-बेद, मिटि गयौ कंस-खेद ।   
गावत बधाइ सूर भीतर बहर के ॥  
फूली है जसोदा रानी, सुत जायौ सार्ङ्गपानी ।  
भूपति उदार फूले भाग फरे घर के ॥

देखे मैं छबी आज अति बिचित्र हरिकी ॥ध्रु०॥  
आरुण चरण कुलिशकंज । चंदनसो करत रंग।   
सूरदास जंघ जुगुली खंब कदली । कटी जोकी हरिकी ॥१॥  
उदर मध्य रोमावली । भवर उठत सरिता चली ।   
वत्सांकित हृदय भान । चोकि हिरनकी ॥२॥  
दसनकुंद नासासुक । नयनमीन भवकार्मुक ।   
केसरको तिलक भाल । शोभा मृगमदकी ॥३॥  
सीस सोभे मयुरपिच्छ । लटकत है सुमन गुच्छ ।   
सूरदास हृदय बसे । मूरत मोहनकी ॥४॥

फुलनको महल फुलनकी सज्या फुले कुंजबिहारी । फुली राधा प्यारी ॥ध्रु०॥  
फुलेवे दंपती नवल मनन फुले फले करे केली न्यारी ॥१॥  
फुलीलता वेली विविधा सुमन गन फुले आवन दोऊं है सुखकारी ॥२॥  
सूरदास प्रभु प्यारपर बारत फुले फलचंपक बेली नेवारी ॥३॥

ऐसे संतनकी सेवा । कर मन ऐसे संतनकी सेवा ॥ध्रु०॥  
शील संतोख सदा उर जिनके । नाम रामको लेवा ॥ क०॥१॥  
आन भरोसो हृदय नहि जिनके । भजन निरंजन देवा ॥ क०॥२॥  
जीन मुक्त फिरे जगमाही । ज्यु नारद मुनी देवा ॥ क०॥३॥  
जिनके चरन कमलकूं इच्छत । प्रयाग जमुना रेवा ॥ क०॥४॥  
सूरदास कर उनकी संग । मिले निरंजन देवा ॥ क०॥५॥

देखो ऐसो हरी सुभाव देखो ऐसो हरी सुभाव।  
बिनु गंभीर उदार उदधि प्रभु जानी शिरोमणी राव ॥ध्रु०॥  
बदन प्रसन्न कमलपद सुनमुख देखत है जैसे |   
बिमुख भयेकी कृपावा मुखकी फिरी चितवो तो तैसे ॥दे०॥१॥  
सरसो इतनी सेवाको फल मानत मेरु समान ।   
मानत सबकुच सिंधु अपराधहि बुंद आपने जान ॥दे०॥२॥  
भक्तबिरह कातर करुणामय डोलत पाछे लाग ।   
सूरदास ऐसे प्रभुको दये पाछे पिटी अभाग ॥दे०॥३॥

**मन तोये भुले भक्ति बिसारी मन तो ये भुले भक्ति बिसारी**

शिरपर काल सदासर सांधत देखत बाजीहारी ॥ध्रु०॥  
कौन जमनातें सकृत कीनो मनुख देहधरी ।  
तामे नीच करम रंग रच्यो दुष्ट बासना धरी ॥ मन० ॥१॥  
बालपनें खेलनमें खोयो जीवन गयो संग नारी ।  
वृद्ध भयो जब आलस आयो सर्वस्व हार्यो जुवारी ॥ मन०॥२॥  
अजहुं जरा रोग नहीं व्यापी तहांलो भजलो मुरारी ।  
कहे सूर तूं चेत सबेरो अंतकाल भय भारी ॥ मन०॥३॥

जय जय श्री बालमुकुंदा । मैं हूं चरण चरण रजबंदा ॥ध्रु०॥  
देवकीके घर जन्म लियो जद । छुट परे सब बंदा ॥ च०॥१॥  
मथुरा त्यजे हरि गोकुल आये । नाम धरे जदुनंदा ॥ च०॥२॥  
जमुनातीरपर कूद परोहै । फनपर नृत्यकरंदा ॥ च०॥३॥  
सूरदास प्रभु तुमारे दरशनकु । तुमही आनंदकंदा ॥ च०॥४॥

निरधनको धनि राम । हमारो०॥ध्रु०॥  
खान न खर्चत चोर न लूटत । साथे आवत काम ॥ह०॥१॥  
दिन दिन होत सवाई दीढी । खरचत को नहीं दाम ॥ह०॥२॥  
सूरदास प्रभु मुखमों आवत । और रसको नही काम हमारो०॥३॥

अद्भुत एक अनुपम बाग ॥ध्रु०॥  
जुगल कमलपर गजवर क्रीडत तापर सिंह करत अनुराग ॥१॥  
हरिपर सरवर गिरीवर गिरपर फुले कुंज पराग ॥२॥  
रुचित कपोर बसत ताउपर अमृत फल ढाल ॥३॥  
फलवर पुहूप पुहुपपर पलव तापर सुक पिक मृगमद काग ॥४॥  
खंजन धनुक चंद्रमा राजत ताउपर एक मनीधर नाग ॥५॥  
अंग अंग प्रती वोरे वोरे छबि उपमा ताको करत न त्याग ॥६॥  
सूरदास प्रभु पिवहूं सुधारस मानो अधरनिके बड भाग ॥७॥

तबमें जानकीनाथ कहो ॥ध्रु०॥  
सागर बांधु सेना उतारो । सोनेकी लंका जलाहो ॥१॥  
तेतीस कोटकी बंद छुडावूं बिभिसन छत्तर धरावूं ॥२॥  
सूरदास प्रभु लंका जिती । सो सीता घर ले आवो॥३॥  
तबमें जानकीनाथ०॥

कमलापती भगवान । मारो साईं कम०॥ध्रु०॥  
राम लछमन भरत शत्रुघन । चवरी डुलावे हनुमान ॥१॥  
मोर मुगुट पितांबर सोभे । कुंडल झलकत कान ॥२॥  
सूरदास प्रभु तुमारे मिलनकुं । दासाकुं वांको ध्यान॥३॥  
मारू सांई कमलापती० ॥

नारी दूरत बयाना रतनारे ॥ध्रु०॥  
जानु बंधु बसुमन बिसाल पर सुंदर शाम सीली मुख तारे ।  
रहीजु अलक कुटील कुंडलपर मोतन चितवन चिते बिसारे ।  
सिथील मोंह धनु गये मदन गुण रहे कोकनद बान बिखारे ।  
मुदेही आवत है ये लोचन पलक आतुर उधर तन उधारे ।  
सूरदास प्रभु सोई धो कहो आतुर ऐसोको बनिता जासो रति रहनारे ॥

**अति सूख सुरत किये ललना संग जात समद मन्मथ सर जोरे**

राती उनीदे अलसात मरालगती गोकुल चपल रहतकछु थोरे ।  
मनहू कमलके को सते प्रीतम ढुंडन रहत छपी रीपु दल दोरे ।  
सजल कोप प्रीतमै सुशोभियत संगम छबि तोरपर ढोरे ।  
मनु भारते भवरमीन शिशु जात तरल चितवन चित चोरे ।  
वरनीत जाय कहालो वरनी प्रेम जलद बेलावल ओरे ।  
सूरदास सो कोन प्रिया जिनी हरीके सकल अंग बल तोरे ॥

बार सत्तरह जरासंध, मथुरा चढ़ि आयौ ।  
गयो सो सब दिन हारि, जात घर बहुत लजायौ ॥  
तब खिस्याइ कै कालजवन, अपनैं सँग ल्यायौ ।  
हरि जू कियौ बिचार, सिंधु तट नगर बसायौ ॥  
उग्रसेन सब लै कुटुंब, ता ठौर सिधायौ ।  
अमर पुरी तैं अधिक, तहाँ सुख लोगनि पायौ ॥  
कालजवन मुचुकुंदहिं सौं, हरि भसम करायौ ।  
बहुरि आइ भरमाइ, अचल रिपु ताहि जरायौ ॥  
जरासिंधु हू ह्वाँ तैं पुनि, निज देस सिधायौ ।  
गए द्वारिका स्याम राम, जस सूरज गायौ ॥1॥

हरि हरि हरि सुमिरन करौ । हरि चरनारबिंद उर धरौ ॥  
हरि सुमिरन जब रुकमिनि कर्यौ । हरि करि कृपा ताहि तब बर्यौ ॥  
कहौं सो कथा सुनौ चित लाइ । कहै सुनै सो रहै सुख पाइ ॥  
कुंडिनपुर को भीषम राइ । बिश्नु भक्ति कौ तिहिं चित्त चाइ ॥  
रुक्म आदि ताके सुत पाँच, रुकमिनि पुत्री हरि रँग राँच ॥  
नृपति रुक्म सों कह्यौ बनाइ । कुँवरि जोग बर श्री जदुराइ ।  
।रुक्म रिसाइ पिता सौं कह्यौ । जदुपति ब्रज जो चिरत मह्यौ ॥  
रुक्मनि कौं सिसुपालहि दीजै । करि विवाह जग मैं जस लीजै ॥  
यह सुनि नृप नारी सौं कह्यौ । सुनि ताकौं अंतरगत दह्यौ ॥  
रुक्म चँदेरी बिप्र पठायौ । ब्याह काज सिसुपाल बुलायौ ॥  
सो बारात जोरि तहँ आयौ । श्री रुकमिनि के मन नहिं भायौ   
कह्यौ मेरे पति श्री भगवान । उनहिं बरौं कै तजौ परान ॥  
यह निहचै करि पत्री लिखी । बोल्यौ बिप्र सहज इक सखी ॥  
पाती दै कह्यौ बचन बाम । सूर जपति निसि दिन तुव नाम ॥  
भीषण सुता रुकमिनी बाम । सूर जपति निसि दिन तुव नाम ॥1॥

**द्विज पाती दै कहियौ स्यामहिं**

कुंडिनपुर की कुँवरि रुकमनि, जपति तुम्हारे नामहिं ॥  
पालागौं तुम जाहु द्वारिका, नंद-नंदनके धामहिं ।  
कंचन, चीर-पटंबर देहौं, कर कंकन जु इनामहिं ॥  
यह सिसुपाल असुचि अज्ञानी, हरत पराई बामहिं ।  
सूर स्याम प्रभु तुम्हरौ भरोसौ, लाज करौ किन नामहिं ॥2॥ 

द्विज कहियौ जदुपति सौं बात बेद बिरुद्ध होत   
कुंडिनपुर, हंस के अंस काग नियरात ॥  
जनि हमरे अपराध बिचारहु, कन्या लिख्यौ मेटि गुरु तात ।  
तन आत्मा समरप्यौ तुमकौं, उपजि परी तातैं यह बात ॥  
कृपा करहु उठि बेगि चढ़हु रथ, लगे समै आवहु परभात ।  
कृष्न सिंह बलि धरी तुम्हारी, लैबै कौं जंबुक अकुलात ॥  
तातैं मैं द्विज बेगि पठायौ, नेम धरम मरजादा जात ।  
सूरदास सिसुपाल पानि गहै, पावक रचौं करौं आघात ॥3॥ 

सुनत हरि रुकमिनि कौ संदेस ।  
चढ़ि रथ चलै बिप्र कौं सँग लै, कियौ न गेह प्रवेस ॥  
बारंबार बिप्र कों पूछत, कुँवरि बचन सो सुनावत ।  
दीनबंधु करुना निधान सुनि, नैन नीर भरि आवत ॥  
कह्यौ हलधर सौं आवहु दल लै, मैं पहुँचत हौं धाइ ।  
सूरज प्रभु कुंडिनपुर आए, बिप्र सो जाइ सुनाइ ॥4॥ 

रुक्मिनि देवी-मंदिर आई ।  
धूप दीप पूजा-सामग्री, अली संग सब ल्याई ॥  
रखवारी कौं बहुत महाभट, दीन्हे रुकम पठाई ।  
ते सब सावधान भए चहुँ दिसि, पंछी तहाँ न जाई ॥  
कुँवरि पूजि गौरी बिनती करी, वर देउ जादवराई ।  
मैं पूजा कीन्ही इहिं कारन, गौरी सुनि मुसकाई ॥  
पाइ प्रसाद अंबिका-मंदिर, रुकमिनि बाहर आई ।  
सुभट देखि सुंदरता मोहे, धरनि गिरे मुरझाई ॥  
इहिं अंतर जादौपति आए, रुकमिनि रथ बैठाई ।  
सूरज प्रभु पहुँचे दल अपनैं, तब सुभटनि सुधि पाई ॥5॥

आवहु री मिलि मंगल गावहु ।  
हरि रुकमिनी लिए आवत हैं, यह आनँद जदुकुलहिं सुनावहु ॥  
बाँधहु बंदनवार मनोहर, कनक कलस भरि नीर धरावहु ।  
दधि अच्छत फल फूल परम रुचि, आँगन चंदन चौक पुरवाहु ॥  
कदली जूथ अनूप किसल दल, सुरँग सुमन लै मंडल छावहु ।  
हरद दूब केसर मग छिरकहु; भेरी मृदंग निसान बजावहु ॥  
जरासंध सिसुपाल नृपति तैं , जीते हैं उठि अरघ चढ़ावहु ।  
बल समेत तन कुसल सूर प्रभु, आए हैं आरती बनावहु ॥6॥